NH Law and Life – 19

"अगर खापों और जाटों व् इनके समकक्ष व् भाईचारा जातियों को समगोत्र विवाह निषेध पद्धति को समय रहते बचाना है तो"

1) या तो हिन्दू धर्म के तहत "सीथियन ओरिजिन पीपल" (Sythian Origin People) या इसी तरह का कोई और नाम से एक सब-ग्रुप (sub-group) यानी अलग पंथ बनवा के उसमें अपनी इन मान्यताओं के लिए अलग से कानून ले लो, जैसे कि सपिंडा मैरिज कानून (Spinda Marriage Law) है, एक धर्म में ही रहते हुए|

2) वैसे तो भगवान करे ऐसे हालात पैदा ना हों लेकिन फिर भी अगर यही विकल्प बचता है तो अपनी भाईचारा जातियों के साथ मिलकर कोई मिलाझुला सर्वसमत्ति का शब्द ले के अलग से धर्म घोषित कर लो और माइनॉरिटी स्टेटस (minority status) ले के अपने सारे सामाजिक कानून, जिनको आपका समाज मान्यता देता है उनको एक पुस्तक में लिखवा के, वो रजिस्टर करवा के बचा लो|

3) अन्यथा सर्व हिन्दू धर्म के झंडे तले आपको अपने अलग से कानून नहीं मिलेंगे और ज्यों-के-त्यों जैसे आप चाहते हो ऐसे तो मिलेंगे ही नहीं| अभी तो मामला जाट-आरक्षण की तरह तूल नहीं पकड़ा है, लेकिन अगर आप लोग इसको जाट-आरक्षण के पीक (peak) वाले स्तर पे ले गए (जिसकी कि आपको थक-हार के ले जाने की नौबत आए ही) तो, ऐसा होने पर कुछ बाधाएं जो आएँगी वो साफ़ हैं; जो कि निम्नप्रकार हैं:

अ) मानव रचित ग्रन्थ व् काव्यों से जुड़े ऐसे किस्से जो समगोत्र, माँ के गोत्र, खून में विवाह होने की मिशालें पेश करते हैं| उदाहरणत: कुंती और सुभद्रा सगी बुआ-भतीजी थी, जो सामाजिक स्तर पर सगे बाप-बेटे यानी क्रमश: पाण्डु और अर्जुन को ब्याही गई थी| और ऐसे ही और भी अनेक पौराणिक उदाहरण हैं| और आज के दिन इन ग्रंथों को इतना प्रचारित कर दिया गया है तो ऐसे में अगर जाट या खाप शादी के लिए एक ही धर्म के तले रहते हुए अलग कानून लेते हैं तो लाजिमी है कि इन ग्रंथों के इन उदाहरणों को आपके आड़े अड़ाया जाए, और कानून ना लेने दिया जाए|

ब) वर्तमान धर्म पर राज करने वाली जातियां, शायद नहीं चाहेंगी कि समगोत्र विवाह निषेध कानून बने| क्योंकि फिर यह उनकी सत्ता व् स्वयत्ता दोनों के लिए चैलेंज (challenge) करेगा और इनके पद को सीधी चुनौती माना जा सकता है, ऐसे आसार बनें| बात कड़वी है पर सत्य है|

स) सदियों से इन मामलों पर स्थूल पड़े जाट जैसे समाजों जिन्होनें कभी इन चीजों की डॉक्यूमेंटेशन (documentation) की नहीं सोची, उनको धर्म को शासित करने वाला वर्ग अपने नीचे से इतनी आसानी से नहीं निकलने देगा| यह वर्ग नहीं चाहेगा कि जाट समाज के भी अपने अलग से लिखित और रजिस्टर्ड कानून हों| और इसका प्रमाण उन्नीस नवम्बर (19 November 2014) की कोर्ट के फैसले की कॉपी (copy) है, जो कि आनी तो उम्मीद के अनुरूप चाहिए थी, लेकिन आई उसके बिलकुल विपरीत|

द) बनिया-पंजाबी जैसी हिन्दू धर्म के तहत ऐसी व्यापारिक जातियां हैं जो कि समगोत्र का होने पर लड़की को मामा को गोद दिलवा मामा का गोत्र दिलवा (पता नहीं लड़के को क्यों नहीं दिलवाते?) दोनों की शादी करते देखे भी गए हैं और सुने भी गए हैं, तो मुमकिन है कि जब यह मामला ऊँचे स्तर तक पहुंचेगा तो आपको इनके तर्क भी दिए जायेंगे, कि ऐसे कर लो| यानी फिर से राह में बाधा डलेगी|

मैं अपने कई लेखों में यह बात साफ़ कर चुका हूँ कि जाटों की समगोत्र में विवाह ना करने की प्रथा लिंग समानता पर आधारित है, जबकि व्यापारिक जातियों की यह लड़की को मामा का गोत्र दिला के उनका विवाह करना, साफ़-साफ़ पुरुष-प्रधानता का परिचायक है, और अगर ऐसा नहीं होता तो लड़की का ही नहीं अपितु लड़के का भी गोत्र बदलवाते| जाट समाज की गोत्र प्रथा के पीछे सात्विक लिंग समानता है कि अगर पिता का गोत्र भी छोड़ा जा रहा है तो माँ का भी छोड़ा जाए| मेरी इस पर विस्तार विवेचना के लिए, मेरे यह दो लेख आपके सन्मुख हैं:

1. Marriage Anthropology in Indian Context: http://www.nidanaheights.com/EH-marriage.html
2. Gotra System of Jats and Khaps: http://www.nidanaheights.com/EH-gotra.html

इसलिए खापों, जाटों और समकक्ष भाईचारा जातियों, जो समगोत्र विवाह कानून नहीं चाहती, वो यह भूल जाएँ कि उनके लिए इस बात पर समस्त हिन्दू विवाह कानून बदला जायेगा| समझदारी इसी में है कि आप लोग ऊपर दिए गए ऑप्शनों (options) में से कोई रास्ता निकाल लें|

और आखिरी निवेदन: अगर खापें यह सोचती हों कि श्री रविशंकर जैसे साधुओं के साथ लगने से आपको इन कानूनों में कोई मदद मिल जाएगी तो मुझे डर है कि आप लोग ग़लतफ़हमी में जी रहे हैं| इनके पीछे आपकी दर्जन-भर जूतियां तक घिस जाएँगी परन्तु जो कानून चाहते हो वो कभी नहीं मिलेगा| हाँ, निजी स्तर पर इनसे आर्ट ऑफ़ लिविंग (art of living) पे कुछ सीखना है तो बेशक इनके सानिध्य में जाईये, लेकिन यह आपके लिए इस कानून को बदलवा देंगे, इसपे मुझे विश्वास नहीं| **इसलिए समय रहते और समाज को इस उहापोह की स्थिति से बचाते हुए और कम समय में इसका हल चाहते हैं तो अपनी भाईचारा जातियों की राष्ट्रीय सर्वखाप आयोजित कीजिये और उसमें मंथन करवा सर्वसमत्ति से इसका बिल पारित कर, कोर्ट को सौंप दें, कि हमें पूरे हिन्दू धर्म के विवाह कानून नहीं बदलवाने, बस जो हम समान भाईचारा जातियां हैं, उनके लिए सपिंडा मैरिज एक्ट (Spinda Marriage Act) की तर्ज पर अलग कानून दे दीजिये| सीधा और सरल रास्ता यही है, अपना पैसा, प्रयास और संसधान बचा के इस कानून को लेने का|**

विशेष: मेरी किसी जाति-वर्ग विशेष से कोई जिरह नहीं, मैं उनकी मान-मान्यताओं और विवेचनाओं को उसी तरीके से आदर-सत्कार करता हूँ, जैसा कि किसी और वर्ग अथवा समाज का| परन्तु जो सत्य है वो है और सत्य यही है कि समूचा हिन्दू धर्म विवाह कानून, एक सिर्फ जाटों या खापों के लिए कभी नहीं बदल सकता | **मैं अपनी बेबाकी और कटु परन्तु सत्य वचनों के लिए क्षमा प्रार्थी होऊं|**

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 26/11/14